SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-2, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com

# पर्यावरण अध्ययन एवं चिन्तन

**डा0 सीमा कुमारी**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग, डी.ए0वी0 कालेज
कानपुर
ई–मेल आई0डी0 drseemakumari50@gmail.com

**सारांश**

*वर्तमान समय में पर्यावरण एक प्रश्न ही नहीं परन्तु एक ऐसा विषय बन गया है जिसके प्रति लोगों की उदासीनता चिन्तनीय है लोगों का पर्यावरण से खास लगाव न होने के कारण नित नवीन समस्यायें उत्पन्न हो रही है। सोचिये जब पर्यावरण संतुलन बिगड़ जायेगा मनुष्य एवं पर्यावरण से सामंजस्य नहीं रह जायेगा तो इसका हमारे दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा यह सोचकर ही मन भयाक्रान्त हो जाता है। पर्यावरण को समझने के लिये हमें शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाना होगा। यदि हम अभी भी न चेते तो बहुत देर हो जायेगी क्यूंकि पर्यावरण की रक्षा एवं संरक्षण एवं उसमें सुधार करने का प्रयास हमारे लिये एक चुनौती है। पर्यावरण सुधार एवं सुरक्षा से सम्बन्धित योजना का कार्यान्वयन अति आवश्यक है। शैक्षिक संस्थाननों में पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्र–छात्राओं को भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिये तैयार किया जा सकता है।*

***मुख्य शब्द***–*पर्यावरण, अध्ययन, चिन्तन, संतुलन, सामंजस्य।*

## भूमिका

विकास के नाम पर संसाधनों का दुरूपयोग एवं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करना, जनंसख्या में भारी मात्रा में वृद्धि इससे प्रकृति एवं मानव के मध्य असन्तुलन उत्पन्न होना। इस दृष्टि से यदि हम देखे तो निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि पर्यावरण में जो समस्यायें व्याप्त है वह आधुनिक विश्व एवं आधुनिक मानव की देन है। हमारी भारतीय परम्परा में पर्यावरण के प्रति स्वतः ही इतनी संचेतना थी कि उसके प्रदूषण का प्रश्न भी उत्पन्न ही नहीं हुआ।

हमारे वैदिक ऋषि महर्षियों ने पर्यावरण के सन्तुलन हेतु वनों के महत्व को समझा। भारतीय संस्कृति का विकास प्रकृति की गोद में वन सम्पदा से सम्पन्न, तपोवनों एवं आश्रमों में हुआ जहाँ भविष्य दृष्टा ऋषियों के मंत्रों में प्रतिदिन पर्यावरण की शुद्धि एवं शान्ति के लिये निरन्तर स्वर गूंजते रहते थे। वाराह पुराण में वृक्षारोपण के महत्व को समझाया गया है ''एक व्यक्ति जो एक पीपल, एक नीम, एक बरगद और दस फूलों के पेड़ अथवा लतायें दो अनार दो सन्तरे व पाँच आम के वृक्ष के लगाता है वह कभी नरक नहीं जाता।''

भारत में पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के लिये सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर अनेक प्रयास किये गये है। सन् 1985 में केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने पर्यावरण शिक्षा की योजना बनायी जिसका उद्देश्य संरक्षण के प्रति लोगों में चेतना जागृत करना था। इसके लिये भारत सरकार की नवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यावरण शिक्षा के लिये विशेष बजट का प्रावधान किया गया। इस धन से पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक संस्थाओं को भी आर्थिक सहायता प्रदान करने का निर्णय भारत सरकार द्वारा लिया गया है ताकि वे संस्थान शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये पर्यावरण सम्बन्धी क्षेत्रीय कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कर सकें।

**पर्यावरण शिक्षा क्या है–**

साधारण शब्दों में पर्यावरण शब्द परि तथा आवरण से मिलकर बना है। परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है ढका हुआ। अतः पर्यावरण शब्द का अर्थ उन सभी परिस्थितियों से है जो हमारे चारों ओर विद्यमान है।

''पर्यावरणीय शिक्षा पर यूनाइटेड स्ट्रेटस पब्लिक लॉ में पर्यावरण शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध मानव एवं प्राकृतिक वातावरण से एवं मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण से होता है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या प्रदूषण संसाधनों की कमी एवं वृद्धि अथवा प्राकृतिक संरक्षण, यातायात एवं स्थानान्तरण तकनीकी विकास, समाप्ति, प्राकृतिक संरक्षण, यातायात एवं स्थानान्तरण तकनीकी विकास ग्रामीण एवं नगरीकरण नियोजन एवं मानव का सम्पूर्ण पर्यावरण निहित रहता है।''

**अर्न्राष्ट्रीय संस्था यूनेस्को** ने पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा को इस प्रकार अभिव्यक्त किया–''पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा के उस प्रत्यय को अभिव्यक्त करती है जो मानव अस्तित्व की यथार्थताओं से सम्बन्धित है। उसके जीवन स्तर से है और उस सन्दर्भ से है, जिसमें उसका जन्म होता है ..... पर्यावरण शिक्षा को औपचारिक, अनौपचारिक तथा औपचारिकेत्तर शिक्षा की सीमा में बांधना एक सर्वव्यापी प्रत्यय है। **कान्फ्रेंस ऑफ अफ्रीकन एजूकेटर्स, नैरोबी** ने कहा है, ''पर्यावरण शिक्षा, सामाजिक और भौतिक पर्यावरण के सम्पूर्ण विकास, इसके प्राकृतिक मानव निर्मित, सांस्कृतिक, आध्यत्मिक संसाधनों के एक साथ राष्ट्रीय उपयोग हेतु तथा इनके संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं अवबोध उत्पन्न करती है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि यदि मानव के अस्तित्व को बचाना है तो पर्यावरण को संरक्षण करना होगा और मानव की अन्तः चेतना को जगाना होगा।

**पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य**

पर्यावरण शिक्षा एक व्यापक क्षेत्र से सम्बन्धित है। बेलग्रेड घोषणा पत्र में पर्यावरण शिक्षा के कुछ सार्वभौमिक उद्देश्यों की संस्तुति की गयी है। पर्यावरण शिक्षा के कुछ व्यावहारिक उद्देश्य उभर कर सामने आये है।

1. **कौशल सम्बन्धी उद्देश्य**–पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का हल खोजने तथा मानव तथा प्रकृति में सन्तुलन बनाये रखने के लिये वैयक्तिक कौशल का विकास करना।
2. **सहभागिता सम्बन्धी उद्देश्य**–पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं तथा पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में जन समुदाय में कर्तव्यों तथा सहभागिता की भावना उत्पन्न करना।
3. **जागरूकता सम्बन्धी उद्देश्य**–व्यक्ति में समाज के प्रति तथा अपने आस–पास के वातावरण से सम्बन्धित समस्याओं एवं उनके संरक्षण के प्रति संवदेनशील एवं जागरूक बनाना।
4. **मूल्यांकन सम्बन्धी योग्यता का उद्देश्य**–मानव में पर्यावरणीय तत्वों पारिस्थितिकी तन्त्र तथा उनसे सम्बद्ध शैक्षिक कार्यक्रमों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सौन्दर्यपरक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में मूल्यांकन करने की योग्यता विकसित करना।
5. **अभिव्यक्ति सम्बन्धी उद्देश्य**–सम्पूर्ण विश्व के मामलों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों, पर्यावरण के प्रति लगाव तथा उसके संरक्षण तथा विकास के लिये प्रेरित करना।
6. **ज्ञान सम्बन्धी उद्देश्य**–व्यक्तियों को पर्यावरण शिक्षा तथा उसके चारों ओर के वातावरण तथा उससे उत्पन्न प्रदूषण और असन्तुलन के विषय में जानकारी देना। जिससे व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में अपनी सहभागिता निश्चित कर सके।

पर्यावरण को सदैव समग्र रूप में देखना चाहिये तभी हम उसके साथ न्याय कर पायेगे उसे संरक्षित कर पायेंगे। हमारा यह प्रयास होना चाहिये कि जन–जन तक यह संदेश पहुँचे कि पर्यावरण को कैसे शुद्ध रखना है उसके अस्तित्व को कैसे बचाना है।

**पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व**

पर्यावरण का संरक्षण करना आज हमारा कर्तव्य बन गया है यदि अभी भी हम लोगों ने इस ओर ध्यान न दिया तो आगे चलकर यह समस्या और भी बलवती होती जायेगी। इस दृष्टि से देखे तो पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। इसे बचाना हमारे अस्तित्व के लिये आवश्यक है। पर्यावरण शिक्षा के महत्व को हम लोग निम्न शीर्षकों के माध्यम से जानेगे।

1. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण**–प्राकृतिक संसाधनों का अंधा धुन्ध दोहन होने से हमारा प्राकृतिक जीवन तेजी से विनाश की ओर बढ़ रहा है। हमें वास्तव में इसका उपयोग बहुत ही सोच समझ कर सीमित मात्रा में करना चाहिये।
2. **प्राचीन एवं नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराना**–आज मनुष्य विलासिता से ग्रसित आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल हो अपने मूल्यों व सांस्कृतिक विरासत से कोसो दूर हो गया है। उसे प्रकृति को बचाने के लिये व उसका संरक्षण करने के लिये अपने मूल्यों व नैतिकता को बचाना होगा।
3. **अग्रिम पीढ़ी को दायित्वों के प्रति जिम्मेदार बनाना**–प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुविधायें केवल वर्तमान पीढ़ी के लिये नहीं है वरन् यह भविष्य के लिये भी है। आज पर्यावरण को जो क्षति पहुँचायी जा रही है उसका परिणाम भावी पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा, पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के महत्व का ज्ञान कराना होगा।
4. **पर्यावरण प्रदूषण के कारणों को ज्ञात करना**–औद्योगीकरण एवं नगरीकरण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुन्ध प्रयोग, वाहनों का भारी मात्रा में प्रयोग, जनसंख्या का बेतहाशा बढ़ना यह वह कारण है जिससे पूरा का पूरा पर्यावरण दूषित हो रहा है। इन कारणों की समाज को जानकारी देकर पर्यावरण शिक्षा के महत्व को बताया जा सकता है।
5. **मानव एवं पर्यावरण सम्बन्धों का ज्ञान कराना**–मानव एवं पर्यावरण एक दूसरे पर आश्रित है एक के बिना दूसरे का काम नहीं चलता है। इसलिये आवश्यक है कि मनुष्य एवं पर्यावरण के मध्य एक साम्यता रहे जिससे मनुष्य जीवन सुचारू रूप से चल सके।
6. **पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव की जानकारी प्रदान करना**–समाज में होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी हमें पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होती है। मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण व उसके दुष्परिणामों का ज्ञान पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से दिया जा सकता है तथा उन्हें सचेत किया जा सकता है।
7. **शिक्षार्थियों में अभिवृत्तियों का विकास करना**–पर्यावरण शिक्षा में शिक्षार्थियों को प्रकृति का अवलोकन एवं प्रयोग द्वारा पर्यावरण का ज्ञान कराया जा सकता है। इससे शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास होगा।
8. **अन्य महत्व**–पर्यावरण शिक्षा शिक्षार्थियों को स्वास्थ्य एवं सफाई जीवन की गुणवत्ता प्रक ृति प्रेम जैसी शिक्षा देकर एक अच्छे नागरिक के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

वायुमण्डल में असंतुलन के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न हो गयी है। ऐसे में वन संरक्षण को बढ़ावा देने के लिये पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

## पर्यावरण शिक्षा के विकास हेतु सुझाव

भारत सरकार ने पर्यावरण सुधार और संरक्षण के लिये निम्नलिखित कार्य योजना बनायी है–

1. उच्च शैक्षिक स्तरों पर पर्यावरण सम्बन्धी रिपोर्ट बनाने का ज्ञान प्रदान किया जाये।
2. विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर पर्यावरण प्रशिक्षण का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाये।
3. पर्यावरण शिक्षा का प्रचार राष्ट्रीय स्तर पर हो। साथ ही मानव व प्रकृति के मध्य सामंजस्य स्थापित किया जाये।
4. पर्यावरण पर आधारित कोर्सों का आयोजन किया जाये।
5. पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार विकसित किया जाये जिसमें विद्यार्थी को पर्यावरण के सिद्धान्तों एवं संकल्पनाओं की जानकारी हो सके।
6. पर्यावरण शिक्षा ऐसी लागू की जाये जिसमें छात्रों में जागृति उत्पन्न हो।
7. पर्यावरणीय शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थानीय पर्यावरण वनस्पति, जीव जन्तु को सम्मिलित किया जाये।
8. ''इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी,'' ''राज्य वन सेवा कालेज,'' ''राज्य वन सेवा कालेज,'' ''वन रेंजर कालेज'' वन कर्मियों को विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करते है। भारतीय वन्य जीवन संस्थान वन प्रबन्ध में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी चला रहा है।
9. प्रदूषण नियंत्रण के लिये प्रादेशिक संगठनों व प्रदूषण नियंत्रण कार्यों में समन्वय किया गया व व्यापक कार्य शुरू किये गये।
10. प्रकृति के जीवों का संरक्षण करने के लिये राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण नीति बनायी गयी है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संतुलन विकास के लिये भावी योजना बनाना।

इस प्रकार हम देखते है कि भारत सरकार पर्यावरण संरक्षण व उसके विकास के लिये सदैव तत्पर रहता है और समय–समय पर उसमें सुधार कार्यक्रम का आयोजन करता रहता है।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

## पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

समग्र रूप में हम देखे तो पायेंगे कि पर्यावरण ही जीवन है। प्रकृति से व्यक्ति अलग नहीं हो सकता उसे पग–पग पर इसकी आवश्यकता महसूस होती है। साथ ही जीव जन्तु पेड़–पौधे यह सभी इससे सम्बन्धित है। यदि कहीं भी जरा सा असंतुलन हुआ तो इसका सीधा प्रभाव मनुष्य जीवन पर पड़ता है। जनसंख्या वृद्धि नगरीकरण औद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण ने प्रदूषण को जन्म दिया है। जो वायु हम जीवित रहने के लिये प्रयोग करते है। जो जल हम अपनी प्यास बुझाने के लिये पीते है। जो भोजन हम शरीर को बलिष्ठ बनाने के लिये ग्रहण करते है। वह सभी विषाक्त है। इससे न जाने हमें किस–किस प्रकार की बीमारियाँ जकड़ लेती है और हम असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते है।

पर्यावरण शिक्षा हम औपचारिक साधनों द्वारा पूर्णरूप से प्रदान नहीं कर सकते है इसके लिये आवश्यक है कि अनौपचारिक साधनों तथा संचार साधनों का प्रयोग भी करें। जिससे मनुष्यों के जीवन में मडरा रहे खतरों को दूर किया जा सके। पर्यावरण शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर सकती है। स्वस्थ दृष्टिकोण को अपनाकर मनुष्य अपना एवं दूसरों का कल्याण कर सकता है।

अनौपचारिक शिक्षा के अभिकरणों में चित्र, पोस्टर प्रर्दशनियाँ, चलचित्र, भाषण मालायें, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली प्रदर्शन, श्रव्य दृश्य सामग्री, सामुदायिक क्लब आदि प्रमुख है। इनके माध्यम से भी लोगों में पर्यावरण शिक्षा प्रदान कर उन्हें जागरूक किया जा सकता है।

**निष्कर्ष**

पर्यावरणीय शिक्षा का वृहद रूप में अध्ययन व चिन्तन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि यदि हमें अपने आने वाली पीढ़ी को एक सुन्दर, स्वस्थ, राष्ट्र देना है तो वर्तमान में व्याप्त समस्याओं का समाधान करना होगा साफ सुथरा वातावरण साफ हवा, साफ पानी, साफ भोजन इसके लिये हमें कमर कस लेना होगा हमारी आधे से ज्यादा आबादी जो मदमस्त होकर जी रही है जिसे आधुनिकता के आगे वन जीव–जन्तुओं का ख्याल नहीं है। अंधा धुन्ध इलेक्ट्रानिक सामानों का प्रयोग, वाहनों का प्रयोग, केमिकल्स का प्रयोग हो रहा है यह हमारे हाथ से हमारा ही जीवन नष्ट करने में उतारू है। आवश्यकता इस बात है कि हम यदि अब न जागरूक हुये तो फिर कभी भी जागरूक न हो पायेगे। इसलिये आवश्यक है कि पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित सुझावों को अपनायें जैविक वस्तुओं का प्रयोग करें अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखे कम से कम प्लास्टिक वस्तुओं व पालीथीन का प्रयोग करें, कोशिश करें कि वर्तमान में अपने राष्ट्र को पालीथीन से मुक्त करें। अपने बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करें उन्हें बतायें कि पर्यावरण का संरक्षण कैसे करें ? प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण व असावधानीपूर्वक उपयोग न करें। इसके अतिरिक्त कूड़े कचरे तथा अपशिष्ट पदार्थों का निस्तारण कैसे करें ? स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल कैसे प्राप्त करें ? ध्वनि प्रदूषण के कारण श्रवण शक्ति क्षीण पड़ रही है। मानसिक तनाव व्याप्त हो रहा है। वनों की अंधाधुन्ध कटाई से जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या उत्पन्न हो रही है। महात्मा गाँधी के अनुसार ''प्रकृति में मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की सामर्थ्य है किन्तु वह उनके लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।'' इस विचार के अनुसार मनुष्य की इस लालचपूर्ण प्रवृति को नहीं रोका गया तो प्रकृति में भारी असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी और हमें इसके भयंकर परिणाम झेलने पड़ेगे। हम सभी अपने आप से यह वादा ले कि हम स्वार्थपरायणता छोड़ एक स्वस्थ व सुदृढ़ राष्ट्र की नीव रखे व अपनी भावी पीढ़ी को एक सुन्दर राष्ट्र उपहार स्वरूप प्रदान करें।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. शर्मा, उमा रानी, ''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'', आलोक प्रकाशन, लखनऊ इलाहाबाद।
2. पाण्डा, अनिल कुमार, ''नवीन शैक्षिक निबन्ध'' साहित्य रत्नालय, कानपुर।
3. पाण्डेय, के0पी0, भारद्वाज, अनीता एवं पाण्डेय आशा, ''पर्यावरण शिक्षा भारतीय सन्दर्भ में'' विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
4. शर्मा, आर0ए0, ''पर्यावरण शिक्षा'' आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
5. गोयल, एम0के0, ''अपना पर्यावरण'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. समाचार पत्र द टाइम्स ऑफ इण्डिया।
7. समाचार पत्र हिन्दुस्तान।


SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-01, Issue-02, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2023/19

# Certificate Of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

डा0 सीमा कुमारी

***For publication of research paper title***

**"पर्यावरण अध्ययन एवं चिन्तन"**

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com